प्रादर्श प्रश्न पत्र 2013–14

विषय – अर्थशास्त्र (Economic)
कक्षा – बारहवीं
सेट–ए

समय– 3 घंटे | **पूर्णांक– 100**
Time- 3 Hours | **Maximum Mark – 100**

निर्देश–

i. सभी प्रश्न अनिवार्य है।
ii. प्रश्न पत्र में दिये गये निर्देश सावधानी पूर्वक पढ़कर उत्तर लिखिए।
iii. प्रश्न 1 से 5 तक वस्तुनिष्ठ प्रश्न है जिनके अन्तर्गत रिक्त स्थानों की पूर्ति, सत्य/असत्य, सही जोड़ी बनाना, एक वाक्य में उत्तर तथा सही विकल्प का चयन करना है। प्रत्येक प्रश्न 5 अंक का है। 1x5= 5x5 = 25 अंक
iv. प्रश्न क्रमांक 6 से 24 तक में आन्तरिक विकल्प दिये गये है।
v. प्रश्न क्रमांक 6 से 10 तक प्रत्येक प्रश्न के लिए 2 अंक एवं प्रश्नों के उत्तर लगभग 30 शब्दों में लिखना है।
vi. प्रश्न क्रमांक 11 से 17 तक प्रत्येक प्रश्न के लिये 4 अंक एवं प्रश्नों के उत्तर लगभग 75 शब्दों में लिखना है।
vii. प्रश्न क्रमांक 18 से 22 तक प्रत्येक प्रश्न के लिए 5 अंक एवं प्रश्नों के उत्तर लगभग 120 शब्दों में लिखना है।
viii. प्रश्न क्रमांक 23 तथा 24 में प्रत्येक प्रश्न पर 6 अंक एवं प्रश्नों के उत्तर लगभग 150 शब्दों में लिखना है।

Instructions –

i. All question are compulsory.
ii. Please the instructions carefully before writing the answer.
iii. Q. No. 1 to 5 are objective type which contain fill up the Blank, True/False, match the column, one sentence answer and choose the correct answers. Each question is allotted 5 marks. 1x1 = 5x5 =25 Marks.
iv. Internal options are given in Q. No. 6 to 24.
v. Q. No. 6 to 10 carry 2 marks each and answer should be given in about 30 words.
vi. Q. No. 11 to 17 carry 4 marks each and answer should be given in about 75 words.
vii. Q. No. 18 to 22 carry 5 marks each and answer should be given in about 120 words.
viii. Q. No. 23 and 24 carry 6 marks each and answer should be given in about 150 words.

प्रश्न 1. सही विकल्प चुनकर लिखिए –

(अ) योगात्मक अर्थशास्त्र का दूसरा नाम है –

(i) समष्टि अर्थशास्त्र (ii) व्यष्टि अर्थशास्त्र

(iii) उपरोक्त दोनों (iv) इनमें से कोई नहीं

(ब) भारत में राष्ट्रीय आय की गणना का कार्य कौन करता है –

(i) राष्ट्रीय आय समिति (ii) राष्ट्रीय न्यादर्श निर्देशालय

(iii) केन्द्रीय सांख्यिकी संगठन (iv) वित्त मंत्रालय

(स) प्रतिकूल भुगतान संतुलन है –

(i) आयात कम (ii) निर्यात अधिक

(iii) कम आयात अधिक निर्यात (iv) अधिक आयात कम निर्यात

(द) भारत में बजट पेश किया जाता है –

(i) लोकसभा के समक्ष (ii) राज्यसभा के समक्ष

(iii) उपर्युक्त दोनों के समक्ष (iv) दोनों में किसी के समक्ष नहीं

(इ) मांग के नियम का आधार है –

(i) सम सीमान्त उपयोगिता नियम (ii) उत्पत्ति ह्रास नियम

(iii) उपयोगिता ह्रास नियम (iv) पूर्ति का नियम

Choose the correct answer in the following.

(a) What also known as Aggregative Economics -

(i) Macro Economics (ii) Micro Economic

(iii) Both of the above (iv) None of the above.

(b) Which body calculates the National Income in India -

(i) National Income Committee (ii) Directorate of National Sample

(iii) Central Statistical Organisation (iv) Finance Ministry.

(c) Adverse Balance payment is -

(i) Less Imports (ii) More Exports

(iii) Less Imports More Exports (iv) More Import and Less Export.

(d) A Budget is presented in India by -

(i) Lok Sabha (ii) Rajya Sabha

(iii) Both the above (iv) None of the above.

(e) The Basis of Law of Demand is :-

(i) Law of Supply (ii) Law of Diminishing Utility

(iii) Law of Equi Marginal Utility (iv) Law of Diminishing Returns

प्रश्न 2. रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए।

(i) कार तथा पेट्रोल .... वस्तुएं हैं।

(ii) रेल बजट संसद में.................के द्वारा प्रस्तुत किया जाता है।

(iii) प्रभावपूर्ण मांग बढ़ने पर रोजगार का स्तर .... है।

(iv) बढ़ती हुई प्रभावपूर्ण मांग ने रोजगार के स्तर को..............है।

(v) अधिकतम सामजिक लाभ के सिद्धांत का प्रतिपादन .... ने किया।

Fill in the blanks.

(i) Car and Patrol are.................commodities.

(ii) Rail Budget is presented by .... in the Parliament

(iii) The level of Employment is ....at increasing effective demand.

(iv) Increasing Effective Demand .... the Level of Employment.

(v) The theory of maximum social advantage propounded by............

प्रश्न 3. स्तंभ 'अ' के लिये स्तंभ 'ब' से चुनकर सही जोड़ियां बनाइए–

	खंड अ	–	**खंड ब**
(अ)	सोना	–	सन् 1935
(ब)	रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया	–	अंतर्राष्ट्रीय बाजार
(स)	सरकार द्वारा होने वाला आय व्यय	–	मूल्य का मापक
(द)	राष्ट्रीय आय	–	आर्थिक कल्याण का बैरोमीटर
(इ)	मुद्रा का प्राथमिक कार्य	–	राजस्व

Make the correct pair for column 'A' choosing from column 'B'

	A	-	B
(a)	Gold	-	Year 1935
(b)	Reserve Bank of India	-	International Market
(c)	Government's Income & Expenditure	-	Measure of Value
(d)	National Income	-	Barometer of Economic Welfare
(e)	Primary function of money	-	Public Finance

प्रश्न 4. सत्य / असत्य बताइये –

(i) अपूर्ण प्रतियोगिता एक व्यवहारिक दशा है।

(ii) अर्थशास्त्र में व्यक्ति को काम न मिलना बेरोजगारी कहलाती है।

(iii) प्रमाप विचलन एक आदर्श व वैज्ञानिक माप है।

(iv) निर्देशांक एक विशेष प्रकार का माध्य होता है।

(v) जब सीमान्त आगम शून्य होता है तब कुल आगम अधिकतम होता है।

Write True or False.

(i) Imperfect competition is practical state of market.

(ii) In Economics of a person doesnt get a job it is known as Unemployment

(iii) The standard deviation in an ideal and scientific measure.

(iv) Index Number is special type of mean.

(v) When marginal revenue is zero then total revenue is maximum.

प्रश्न 5. एक वाक्य में उत्तर दीजिए।

1. व्यापार का क्या उद्देश्य होता है?
2. अपने देश की वस्तु दूसरे देश में बेचना क्या कहलाता है?
3. भारत में मुद्रा निर्गमन का अधिकार किस बैंक को है?
4. नाबार्ड की स्थापना कब हुई?
5. बजट की अवधि कितने वर्ष की होती है?

Write the Answer of the following questions in a sentence.

1. What is purpose of trade?
2. What is the sale of goods from one county to another called?
3. Which Bank has power of issuing money in India?
4. When Nabard was established?
5. Write the duration of the Budget.

प्रश्न 6. मांग को प्रभावित करने वाले दो तत्वों का वर्णन कीजिए।

Discuss any two elements that affect Demand.

अथवा

Or

पूर्ति के नियमों के कोई दो अपवादों का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।

Give any two exceptions to the Law of Supply.

प्रश्न 7. राष्ट्रीय सम्पत्ति के किन्हीं दो अंगों का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।

Discuss any two organs of National Wealth.

अथवा

Or

बन्द अर्थव्यवस्था किसे कहते है? संक्षिप्त वर्णन कीजिए।

What is known as Closed Economy? Give a Brief Description.

प्रश्न 8. अनैच्छिक बेरोजगारी का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

Discuss the meaning of Involuntary Unemployment.

अथवा

Or

अत्यधिक मांग का कीमत पर प्रभाव बताइये।

Give the effect of Excess Demand on Prices.

प्रश्न 9. सांकेतिक मुद्रा किसे कहते है?

What is known as Symbolic Currency

अथवा

Or

भारतीय रिजर्व बैंक की स्थापना कब हुई एवं इसका प्रधान कार्यालय कहां पर स्थित है?

When was the Reserve Bank of India established and where are its Headquarters situated?

प्रश्न 10. माध्य विचलन के दो गुणों को समझाइये।

Describe two features of Mean Deviation.

अथवा

Or

धनात्मक सह सम्बन्ध किसे कहते है? उदाहरण दीजिए।

What is known as Positive Co-relation? Give Examples.

प्रश्न 11. व्यष्टि और समष्टि अर्थशास्त्र में कोई चार अंतर लिखिये।

Write four differences between micro and macro economics.

अथवा

Or

समष्टि अर्थशास्त्र की चार विशेषताऐं लिखिए।

Write four characteristics of macro economic.

प्रश्न 12. क्षेत्र के आधार पर बाजार के प्रकारों की व्याख्या कीजिए।

Classify and explain the market on the basis of area.

अथवा

Or

पूर्ण प्रतियोगी बाजार की चार विशेषाऐं लिखिए।

Write four characteristics of perfect competition market.

प्रश्न 13. रिजर्व बैंक के केन्द्रीय बैंकिंग संबंधी कार्य लिखिए।

Elaborate center banking functions of the Reserve Bank.

अथवा

Or

आधुनिक अर्थव्यवस्था में व्यापारिक बैंकों का महत्व समझाइये।

Explain importance of commercial banks in modern economy.

प्रश्न 14. भुगतान संतुलन और व्यापार संतुलन में अंतर लिखिए।

Give differences between balance of payment and balance of trade.

अथवा

Or

भुगतान संतुलन की प्रतिकूलता के चार कारण लिखिए।

Write four reasons for the adverse balance of payment.

प्रश्न 15. एक अच्छी कर प्रणाली की चार विशेषताऐं लिखिए।

Write four characteristics of a good tax.

अथवा

Or

भारतीय कर प्रणाली के चार दोष लिखिए।

Write about four demerits of Indian tax system.

प्रश्न 16. सहसंबंध की परिभाषा तथा इसके प्रकार लिखिये।

Mention the definition and types of correlation.

अथवा

Or

कार्ल पियर्सन का सहसंबंध गुणांक क्या है? इसकी मान्यताएं लिखिये।

What is Kare Pearsons co-efficient of correlation? Write its assumption.

प्रश्न 17. निम्न मदों का विस्तार एवं विस्तार गुणांक ज्ञात कीजिए –

माह	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
आय	139	145	151	159	162	165	168	170	171	172	174	175

Find out the range and co-efficient of range of the following data -

Month	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
Income	139	145	151	159	162	165	168	170	171	172	174	175

अथवा

Or

निर्देशांक की रचना करते समय कौन–कौन सी सावधानियां रखनी चाहिए।

Which precautions should be taken while constructing Index Numbers.

प्रश्न 18. वस्तु की पूर्ति को प्रभावित करने वाले कोई पांच तत्वों का वर्णन कीजिये।

Describe any five factors affecting the supply of commodity.

अथवा

Or

लागत का अर्थ बताते हुए लागत वक्र U आकर का क्यों होता है। समझाइये।

What is meant by cost? Why the cost curves are U shaped.

प्रश्न 19. राष्ट्रीय आय लेखांकन के महत्व की विवेचना कीजिए।

Describe the Importance of National Income Accounting.

अथवा

Or

राष्ट्रीय पूंजी के घटकों की विवेचना कीजिए।

Describe the components of National Capital.

प्रश्न 20. उपभोग फलन के कोई पांच निर्धारक तत्व लिखिए।

Explain any five factors which determine consumption function.

अथवा

Or

अभावी मांग को ठीक करने के पांच उपाय लिखिए।

Give the five measures to correct deficiency demand.

प्रश्न 21. सरकारी बजट की पांच विशेषताएं लिखिए।

Write five characteristics of a Government Budget.

अथवा

Or

बजट बनाने के प्रमुख पांच उद्देश्य लिखिए।

Write five main objectives of Budget.

प्रश्न 22. निर्देशांक किसे कहते हैं? निर्देशांक के प्रकारों की संक्षिप्त व्याख्या कीजिये।

What is Index Number? Explain types of Index Number.

अथवा

Or

अपकिरण का अर्थ एवं अपकिरण ज्ञात करने की दो रीतियों का वर्णन कीजिये।

What is dispersion? Explain any two methods of the measure of dispersion.

प्रश्न 23. मांग को परिभाषित करते हुए मांग के नियम की सचित्र व्याख्या कीजिए।

Give the definition of demand and explain the law of demand with the help of a diagram.

अथवा

Or

अल्पकाल में लागत विश्लेषण को समझाइये।

Explain cost analysis in short period.

प्रश्न 24. निम्नलिखित आंकड़ों से फिशर का आदर्श निर्देशांक ज्ञात कीजिये–

वस्तुऐं	वर्ष 1990		वर्ष 2000	
	मूल्य	मात्रा	मूल्य	मात्रा

चावल	2	20	5	15
गेहूं	4	4	8	5
चना	1	10	2	12
ज्वार	5	5	10	6

Find out Index Number using fisher's ideal index number from the following data-

Commodity	Year 1990		Year 200	
	Price	Qty.	Price	Qty.
Rice	2	20	5	15
Wheat	4	4	8	5
Gram	1	10	2	12
Jwar	5	5	10	6

अथवा

Or

निम्न आंकड़ों से प्रमाप विचलन ज्ञात कीजिये –

अंक	0–10	10–20	20–30	30–40	40–50
छात्र संख्या	12	21	23	34	10

Calculate standard deviation from the following data -

Marks	0–10	10–20	20–30	30–40	40–50
No. of Student	12	21	23	34	10

– – – – – –

<u>आदर्श उत्तर</u>

विषय – अर्थशास्त्र (Economic)
कक्षा – बारहवीं

वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर –

उत्तर 1. सही विकल्प चुनकर लिखिए –

(अ) समष्टि अर्थशास्त्र

(ब) केन्द्रीय सांख्यिकी संगठन

(स) अधिक आयात कम निर्यात

(द) उपर्युक्त दोनों के समक्ष

(इ) उपयोगिता ह्रास नियम

प्रत्येक सही उत्तर लिखने पर 1 अंक कुल 5 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 2. रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए –

(i) पूरक

(ii) रेल मंत्री

(iii) बढ़ता

(iv) बढ़ाया

(v) डाल्टन

प्रत्येक सही उत्तर लिखने पर 1 अंक कुल 5 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 3. सही जोडियां –

	खंड अ	–	खंड ब
(अ)	सोना	–	अंतर्राष्ट्रीय बाजार
(ब)	रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया की स्थापना	–	सन् 1935
(स)	सरकार द्वारा होने वाला आय व्यय	–	राजस्व

(द) राष्ट्रीय आय – आर्थिक कल्याण का बैरोमीटर

(इ) मुद्रा का प्राथमिक कार्य – मूल्य का मापक

प्रत्येक सही उत्तर लिखने पर 1 अंक कुल 5 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 4. सत्य/असत्य बताइए –

(i) सत्य

(ii) असत्य

(iii) सत्य

(iv) सत्य

(v) सत्य

प्रत्येक सही उत्तर लिखने पर 1 अंक कुल 5 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 5. एक वाक्य में उत्तर दीजिए –

(1) व्यापार का प्रमुख उद्देश्य लाभ कमाना होता है।

(2) अपने देश की वस्तु दूसरे देश में बेचना अर्न्तराष्ट्रीय/विदेशी व्यापार कहलाता है।

(3) मुद्रा निर्गमन का अधिकार रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया (केन्द्रीय बैंक) को हैं।

(4) नाबार्ड की स्थापना सन् 1982 में हुई।

(5) बजट की अवधि एक वर्ष की होती है।

प्रत्येक सही उत्तर लिखने पर 1 अंक कुल 5 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 6. मांग को प्रभावित करने वाले दो तत्व निम्न है –

1. वस्तु की कीमत।
2. मौसम एवं जलवायु।

2 अंक

उपर्युक्त वर्णन किये जाने पर 2 अंक प्राप्त होंगे।

अथवा

पूर्ति के नियम के दो अपवाद निम्न है –

1. भविष्य में कीमत परिवर्तन की संभावना।
2. कृषि वस्तुओं पर लागू न होना।

2 अंक

उपर्युक्त वर्णन किये जाने पर 2 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 7. राष्ट्रीय सम्पत्ति के दो अंग निम्न है –

1. प्राकृतिक संसाधन।
2. श्रम शक्ति।

2 अंक

उपर्युक्त वर्णन किये जाने पर 2 अंक प्राप्त होंगे।

अथवा

बंद अर्थ व्यवस्था वह अर्थ व्यवस्था है जब किसी देश का अन्य दूसरे देशों से कोई आर्थिक संबंध नहीं होता है। ऐसी अर्थ व्यवस्था का विश्व की अन्य अर्थ व्यवस्थाओं से कोई संबंध नहीं रहता है। बंद अर्थ व्यवस्था की आर्थिक क्रियाएं शेष विश्व में होने वाले परिवर्तनों से प्रभावित रहती है।

2 अंक

उपर्युक्त वर्णन किये जाने पर 2 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 8. अनैच्छिक बैरोजगारी वह स्थिति है जिसमें लोगों को रोजगार के अभाव में बैरोजगार रहना पड़ता है। जब लोग मजदूरी की वर्तमान दर पर काम करने के लिये तैयार होते है। लेकिन उन्हें काम नहीं मिलता तो ऐसी स्थिति को अनैच्छिक बैरोजगारी कहा जाता है।

2 अंक

उपर्युक्त वर्णन किये जाने पर 2 अंक प्राप्त होंगे।

अथवा

अत्याधिक मांग का कीमत पर प्रभाव देश में वस्तु एवं सेवाओं के मूल्यों में प्रायः वृद्धि हो जायेगी यदि अर्थव्यवस्था इस स्थिति में है कि वस्तुओं एवं सेवाओं का उत्पादन और अधिक नहीं बढ़ाया जा सकता है तो इसका प्रभाव यह होगा कि देश में वस्तुओं एवं सेवाओं की कमी हो जायेगी और इनके मूल्य बहुत अधिक बढ़ जायेंगे।

2 अंक

उपर्युक्त वर्णन किये जाने पर 2 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 9. सांकेतिक मुद्रा देश की सहायक मुद्रा होती है। इसका अंकित मूल्य इसके वास्तविक मूल्य से अधिक होता है। सांकेतिक मुद्रा में वस्तुओं एवं सेवाओं का मूल्य निर्धारित नहीं होता है। यह मुद्रा प्रायः घटिया एवं हल्की किस्म की धातु से निर्मित होती है।

2 अंक

उपर्युक्त वर्णन किये जाने पर 2 अंक प्राप्त होंगे।

अथवा

भारतीय रिजर्व बैंक की स्थापना सन 1935 में हुई। इसका मुख्य कार्यालय मुम्बई में है।

2 अंक

उपर्युक्त वर्णन किये जाने पर 2 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 10. माध्यविचलन के गुण –

1. माध्यविचलन को समझना एवं इसकी गणना करना अधिक आसान होता है।
2. माध्य विचलन श्रेणी के सभी मूल्यों पर आधारित होता है। इसलिए श्रेणी की संरचना के बारें में पूर्ण जानकारी प्राप्त होती है।

2 अंक

उपर्युक्त वर्णन किये जाने पर 2 अंक प्राप्त होंगे।

अथवा

धनात्मक सह सम्बंध– यदि दो चरों में परिवर्तन की दिशा एक होतो उसे धनात्मक सह संबंध कहते है।

उदाहरण – मूल्य वृद्धि के साथ–साथ पूर्ति में वृद्धि होना।

2 अंक

उपर्युक्त वर्णन किये जाने पर 2 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 11. व्यष्टि एवं समष्टि अर्थशास्त्र में 4 अंतर

क्र.	अंतर का आधार	व्यष्टि अर्थशास्त्र	समष्टि अर्थशास्त्र
1.	विषय सामग्री	व्यष्टि अर्थशास्त्र में वैयक्तिक आर्थिक इकाईयों का अध्ययन किया जाता हैं	समष्टि अर्थशास्त्र में संपर्णू अर्थव्यस्था का अध्ययन किया जाता है।
2.	तेजी और मंदी	व्यष्टि अर्थशास्त्र में व्यक्तिगत फर्म उद्योग व्यापारिक ईकाई में तेजी व मंदी की विवेचना की जाती है।	समष्टि अर्थशास्त्र में संपूर्ण अर्थव्यवस्था में आर्थिक मंदी तथा आर्थिक तेजी का स्पष्टीकरण किया जाता है।
3.	सीमा	व्यष्टि अर्थशास्त्र का क्षेत्र सीमान्त विश्लेषण आदि पर आधारित नियमों तक सीमित है।	समष्टि अर्थशास्त्र का क्षेत्र राष्ट्रीय आय, पूर्ण रोजगार एवं राजस्व आदि संपूर्ण अर्थ व्यवस्था से संबंधित समस्याओं का विश्लेषण करता है।
4.	विश्लेषण	व्यष्टि अर्थशास्त्र कीमत	समष्टि अर्थशास्त्र का लक्ष्य

विश्लेषण से संबंध रखता है | आय का विश्लेषण करना है।

(प्रत्येक सही अन्तर पर 1 अंक कुल 4 अंक)

अथवा

समष्टि अर्थशास्त्र की चार विशेषताऐं निम्नलिखित है

(1) विस्तृत दृष्टिकोण

(2) सामूहिक हितों पर बल

(3) परस्पर निर्भरता

(4) आय व रोजगार सिद्धांत

(1) विस्तृत दृष्टिकोण :– समष्टि अर्थशास्त्र की धारणा विस्तृत है। इसमें छोटी–छोटी इकाईयों को महत्व नहीं दिया जाता बल्कि इसकी सहायता से राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय समस्याओं का हल निकाला जाता है।

(2) सामूहिक हितों पर बल :– समष्टि अर्थशास्त्र की एक महत्वपूर्ण विशेषता है सामूहिक हितों पर सर्वाधिक बल देना, यह व्यक्तिगत हितों की तुलना में सामूहिक हितों पर ध्यान देता है।

(3) परस्पर निर्भरता :– समष्टि अर्थशास्त्र में समूह का अध्ययन किया जाता है, इसमें इतनी अधिक इकाईयां होती है जो परस्पर जुड़ी होती है, एक दूसरे से संबंधित होती हैं एक इकाई में परिवर्तन करने पर अन्य मात्राओं के संतुलन स्तर में भी परिवर्तन हो जाता है।

(4) आय व रोजगार सिद्धांत – समष्टि अर्थशास्त्र में राष्ट्रीय आय तथा कुल रोजगार का अध्ययन केन्द्रीय स्थान रखता हैं, इसलिये इसे आय व रोजगार का सिद्धांत भी कहते हैं

(सही बिन्दु लिखे जाने पर 1 अंक कुल 4 अंक)

उत्तर 12. क्षेत्र के आधार पर बाजार चार प्रकार का होता है :–

(1) स्थानीय बाजार :– किसी वस्तु के क्रेता एवं विक्रेता छोटे क्षेत्र या सीमित स्थान तक होते है तो उसे स्थानीय बाजार कहते है। उदा. के लिए शीघ्र नष्ट होने वाली वस्तुएं जैसे–दूध, सब्जी, फल, मछली इत्यादि । या ऐसी वस्तु जो मूल्य की अपेक्षा भारी होती है जैसे–रेत, मिट्टी, ईट आदि।

(2) प्रादेशिक बाजार :– जब किसी वस्तु के क्रेता–विक्रेता एक बड़े क्षेत्र या प्रांत में फैले होते है तो उस वस्तु का बाजार प्रादेशिक बाजार होता है। जैसे– लाख की चूड़ियां राजस्थान में।

(3) राष्ट्रीय बाजार :– जब किसी वस्तु के क्रेता–विक्रेता पूरे देश में फैले हो तो वह राष्ट्रीय बाजार कहलता है। जैसे–कपड़ा, गेहूं, स्कूटर आदि।

(4) अंतर्राष्ट्रीय बाजार :– जब किसी वस्तु की मांग पूरे विश्व में होती है तो वह अन्तर्राष्ट्रीय बाजार कहलाता है जैसे – सोना, चांदी।

(प्रत्येक सही बाजार के प्रकार लिखने पर 1 अंक, कुल 4 अंक)

अथवा

पूर्ण प्रतियोगिता बाजार की चार विशेषताऐं निम्नलिखित हैं :–

(1) क्रेता–विक्रेता की अधिक संख्या :– पूर्ण प्रति में क्रेता–विक्रेता की संख्या अधिक होती है इसलिए वे बाजार को प्रभावित नहीं कर सकते।

(2) समरूप वस्तु :– इसमें सभी विक्रेता एक रूप या समान वस्तुएं बेचते हैं जो गुण, आकार, पैकिंग आदि के समान होती है।

(3) फर्मों का स्वतंत्र प्रवेश बहिर्गमन :– पूर्ण प्रतियोगिता में फर्मों के प्रवेश व बहिर्गमन पर कोई बाधा नहीं होती वे जब चाहे उद्योग से बाहर या अंदर आ जा सकती है।

(4) बाजार का पूर्ण ज्ञान :– क्रेता–विक्रेता को बाजार की पूरी जानकारी होना चाहिए। कहां किस कीमत पर सौदे हो रहे है।

(5) साधनों की गतिशीलता :– उत्पत्ति के साधन गतिशील होना चाहिए। ताकि जहां अधिक पारिश्रमिक मिले वहां वे जा सके।

(6) यातायात लागत न होना :– यह मान लिया जाता है कि सभी क्रेता–विक्रेता एक दूसरे के समीप है इसलिए यातायात लागत नहीं है।

(प्रत्येक सही विशेषता पर 1 अंक कुल 4 अंक)

उत्तर 13. रिजर्व बैंक केन्द्रीय बैंक के समस्त कार्यों को करता है। प्रमुख कार्य निम्न है–

(1) नोट निर्गमन – रिजर्व बैंक को नोट निर्गमन का एकाधिकार प्राप्त है। यह बैंक 2 रुपये से 1000 रुपये तक के नोट निर्गमित कर सकती है जिसके लिए न्यूनतम कोष पद्धति को अपनाया गया है। रिजर्व बैंक के पास कम से कम 200 करोड़ रुपये का अंश होना चाहिए, जिसमें से 115 करोड़ रुपये का स्वर्ण एवं शेष राशि विदेशी प्रतिभूतियों में हो सकती है।

(2) साख नियमन – यह नियमन (i) बैंक दर (ii) खुले बाजार की क्रियाएं (iii) नकद कोषों के अनुपात में परिवर्तन (iv) तरल कोषों के अनुपात में अनुपात (v) बिल बाजार योजना (vi) बहुमुखी ब्याज दरें आदि के माध्यम से किया जा सकता है।

(3) सरकारी बैंकर, प्रतिनिधि एवं सलाहकार – रिजर्व बैंक सरकारों की समस्त आय अपने पास जमा करता है, व्ययों का भुगतान करता है एवं ऋण की व्यवस्था करता है। पंचवर्षीय योजनाओं के वित्तीय पहलुओं पर सरकार को सलाह देता है।

(4) विदेशी विनियम दर का नियमन – इसके लिए रिजर्व बैंक रुपये की बाह्य दर को बनाये रखने का कार्य करता है। विदेशों में स्थित भारतीय दूतावासों के लिए विनियम की व्यवस्था करता है।

(5) बैंकों का बैंक– रिजर्व बैंक कोई भी नई बैंक खोलने एवं पुरानी बैंक बंद करने की अनुमति देता हैं। बैंकों के बिलों को भुनाता है। बैंकों का निरीक्षण करता है, आवश्यकता पड़ने पर उन्हें ऋण देता है।

(6) समाशोधन कार्य – मुंबई, कोलकाता, चेन्नई, बैंगलोर, नागपूर, पटना, हैदराबाद, नईदिल्ली आदि के समाशोधन गृहों की व्यवस्था रिजर्व बैंक स्वयं करता है एवं अन्य की व्यवस्था भारतीय स्टेट बैंक करता है।

(प्रत्येक सही बिन्दु पर 1 अंक कुल 4 अंक)

अथवा

आधुनिक अर्थ व्यवस्था में व्यापारिक बैंकों का महत्व –

आधुनिक अर्थव्यवस्था में बैंकों का महत्वपूर्ण स्थान है। आज बैंक समाज की संपूर्ण आर्थिक प्रगति की स्थायी आधारशिला है। 'विक्सेल' के शब्दों में, ''बैंक आधुनिक मुद्रा व्यवस्था का ह्रदय तथा केन्द्र बिन्दु है।''

(1) बचतों का उत्पादन कार्यों में प्रयोग – बैंक देश की छोटी एवं बड़ी बचतों को संग्रहित करते हैं। दूसरी ओर व्यापार वाणिज्य एवं उद्योगों की वित्तीय आवश्यकताओं को पूरा करते हैं।

(2) मुद्रा या पूंजी का हस्तान्तरण – बैंक की सहायता से ग्राहक अपनी पूंजी को सलतापूर्वक सुरक्षा एवं शीघ्रता के साथ एवं स्थान से दूसरे स्थान को हस्तांतरित कर सकते है।

(3) मुद्रा प्रणाली में लोच – बैंक आवश्यकतानुसार मुद्रा की पूर्ति में कमी या वृद्धि करके देश की अर्थव्यवस्था में लोच उत्पन्न करते हैं तथा देश के मौद्रिक प्रबंध को लोचदार बनाते हैं।

(4) बहुमूल्य वस्तुओं की सुरक्षा – बैंकों में अतिरिक्त धन जमा कराने, एक स्थान से दूसरे स्थान को बैंकों द्वारा धन भेजने एवं बैंक के लॉकर में बहुमूल्य वस्तुएं रखने से धन सुरक्षित रहता है।

(5) बैंकिंग आदत को बढ़ावा – बैंकों के विस्तार से जनता को बैंकों से संपर्क बढ़ जाता है और उनमें बैंकिंग आदन उत्पन्न हो जाती है। साख–पत्रों का प्रयोग अधिक होने लगता है।

(6) भुगतान में सुविधा – बैंक के कारण ही चैक द्वारा भुगतान की सुविधा संभव हो सकती है। चैक द्वारा भुगतान से सुरक्षा बनी रहती है। विदेशी भुगतानों में भी यात्री चेकों, साख पत्रों और विदेशी विनियम की व्यवस्था के द्वारा सुविधा रहती है।

(प्रत्येक सही बिन्दु पर 1 अंक कुल 4 अंक)

उत्तर 14. भुगतान संतुलन तथा व्यापार संतुलन में अंतर

	व्यापार संतुलन	भुगतान संतुलन
1	व्यापार संतुलन में आयात निर्यात की जाने वाली दृश्य मदो को ही शामिल किया जाता है।	भुगतान संतुलन में दृश्य मदों के साथ–साथ अदृश्य मदों को भी शामिल किया जाता है।
2	व्यापार संतुलन, भुगतान संतुलन का एक भाग है।	भुगतान संतुलन की धारणा अधिक व्यापक होती है।
3	किसी देश का व्यापार संतुलन पक्ष में न होना कोई अधिक चिन्ता का विषय नही है।	यदि भुगतान संतुलन प्रतिकूल है तो यह चिन्ता का विषय है।
4	व्यापार संतुलन अनुकूल या प्रतिकूल हो सकता है।	भुगतान सुंलन सदा ही संतुलित रहता है।

(प्रत्येक सही बिन्दु पर 1 अंक कुल 4 अंक)

अथवा

भुगतान संतुलन में प्रतिकूलता के प्रमुख कारण इस प्रकार है –

(1) पेट्रोलियम पदार्थों के आयात में वृद्धि – तेल उत्पादक देश अपने पेट्रोलियम पदार्थों के मूल्य प्रतिवर्ष बढ़ाते रहे है साथ ही साथ देश में पेट्रोलियम पदार्थों की खपत भी बढ़ी है, जिससे भारी मात्रा में इनका आयात किया गया है।

(2) मशीनों के आयात में वृद्धि – आर्थिक नियोजन के कारण देश में औद्योगीकरण व कृषि विकास की गति तीव्र हुई है, जिसके कारण मशीनों को भारी मात्रा में आयात करना पड़ा है।

(3) आशा के अनुरूप निर्यातों में वृद्धि न होना – भारत में भुगतान संतुलन के प्रतिकूल होने का एक कारण निर्यातों का आशानुरूप न बढ़ना है।

(4) अंतर्राष्ट्रीय ऋण एवं विनियोग– भारत ने विकास कार्यों के लिए भारी मात्रा में ऋण लिए है जिसके ब्याज व मूलधन वापसी के लिये भी विदेशी विनियम व्यय करना पड़ता हैं, इससे भी भुगतान संतुलन प्रतिकूल हो गया है।

(प्रत्येक सही बिन्दु पर 1 अंक, कुल 4 अंक)

उत्तर 15. एक अच्छी कर प्रणाली की चार विशेषताएं निम्नलिखित हैं –

(1) लचीलापन – कर प्रणाली का ढांचा ऐसा बनाया जाए जिसमें पर्याप्त लचीलापन हो। आधुनिक राज्य की आवश्यकता तथा उद्देश्यों के अनुसार करों को परिवर्तित करना संभव होना चाहिए।

(2) संतुलित – एक अच्छी कर प्रणाली संतुलित होना चाहिए। सभी करों में संतुलन होना चाहिए ताकि पर्याप्त मात्रा में आय प्राप्त हो सके।

(3) सरलता – एक अच्छी कर प्रणाली में सरलता होती है। अनावश्यक जटिलताओं का अभाव होता है।

(4) आर्थिक विकास – एक अच्छी कर प्रणाली उद्योग एवं व्यापार पर बुरा प्रभाव नहीं डालती बल्कि देश के आर्थिक विकास में मदद करने वाली होना चाहिए।

(प्रत्येक सही विशेषता लिखने पर 1 अंक कुल 4 अंक)

अथवा

भारतीय कर प्रणाली के चार दोष निम्न लिखित है–

(1) जटिल कर संरचना – भारतीय कर संरचना जटिल है जिसे अनेक विवाद उत्पन्न हो जाते हैं कर प्रशासन में कठिनाई आती है व कर चोरी के रास्ते निकलते है।

(2) करों की विभिन्नता – भारतीय कर प्रणाली में अनेक कर लगाए जाने के कारण एक ही करदाता को अनेक कर अधिकारियों के पास जाना पड़ता है।

(3) कर प्रणाली का अवैज्ञानिक विकास – भारतीय करों का विकास अव्यवस्थित रूप से हुआ है इसलिए समाज के विभिन्न वर्गों पर पड़ने वाले प्रभावों का सही प्रकार से अध्ययन नहीं किया जाता है।

(4) समता के सिद्धांत का अभाव – भारतीय कर संरचना में समता के सिद्धांत का अभाव पाया जाता है। जैस कृषि से प्राप्त आय पर कोई कर नहीं लगाया जाता जबकि उद्योगों से प्राप्त आय पर ऊंची दर से कर लगाऐ जाते हैं।

(प्रत्येक सही दोष लिखने पर 1 अंक, कुल 4 अंक)

उत्तर 16. सह संबंध की परिभाषा –

प्रो किंग के शब्दों में, दो समंक श्रेणियों व समंक समूहों के मध्य कार्य कारण संबंध ही सह–संबंध कहलाता है।

प्रकार –

(1) धनात्मक और ऋणात्मक सह संबंध – यदि एक चर में वृद्धि या कमी होने पर दूसरे चर में भी वृद्धि या कमी हो अर्थात दोनों चरों में समान दिशा मे परिवर्तन हो तो सह–संबंध धनात्मक कहलाता हैं। इसकी विपरीत दशा को ऋणात्मक कहते है।

(2) रेखीय तथा अरेखीय सह–सम्बन्ध– यदि दो चरों के मध्य परिवर्तनों का अनुपात सदैव समान रहता है। उनके मध्य रेखीय सह–सम्बंध कहलाता है। इसके विपरीत, यदि दो चरों के मध्य परिवर्तनों का अनुपात बदलता रहता है। तो उनके मध्य अरेखीय या वक्र रेखीय सह–सम्बंध होता है।

(3) सरल, आंशिक तथा बहुगुणी सह–सम्बंध – केवल दो चरों के मध्य सह–सम्बंध को साधारण या सरल (या केवल सह सबंध) कहते है । इसमें एक श्रेणी जिसे आधार श्रेणी कहते है, के चर मूल्य स्वतंत्र होते है तथा दूसरी श्रेणी जिसे सम्बद्ध श्रेणी कहते है के चर मूल्य आश्रित होते है जब दो मूल्यों में एक अन्य स्वतंत्र चर मूल्य का समावेश करके सह–सम्बंध ज्ञात किया जाता है तब उसे आंशिक सह सम्बंध कहते है। बहुगुणी में तीन या अधिक चर मूल्यों के मध्य सह–सम्बंध का अध्ययन किया जाता है।

(परिभाषा पर 1 अंक तथा प्रकार पर 3 अंक कुल 4 अंक)

अथवा

दो चरों के मध्य सह–सम्बन्ध की मात्रा का परिकलन करने के लिए महान ब्रिटिश जीव विज्ञानी एवं सांख्यकी शास्त्री कार्ल पियर्सन ने उन्नीसवी शताब्दी (1896) में एक सूत्र का प्रतिपादन किया = 01

यह सूत्र अंक गणितीय माध्य तथा प्रमाप विचलन पर आधारित है जो क्रमशः केन्द्रीय प्रवृत्ति तथा अपकिरण की आदर्श मापें है। कार्ल पियर्सन द्वारा प्रतिपादित सूत्र से सह–सम्बंध गुणक ज्ञात किया जाता है जो +1 तथा – 1 के अंतर्गत ही होता है। यदि सह सम्बंध गुणक +1 होता है तो दोनों श्रेणियों में पूर्ण धनात्मक सह सम्बंध तथा – 1 होता है तो पूर्ण ऋणात्मक सह सम्बन्ध पाया जाता है। यदि गुणक शून्य हो तो दोनों श्रेणियों के मध्य सह–सम्बंध का अभाव होता है। जैसे–जैसे गुणक की माप 0 से 1 की ओर बढ़ती है वैसे वैसे सह सम्बंध का परिणाम भी बढ़ता है।

मान्यताएं – दोनों श्रेणियां जिनके मध्य सह–सम्बंध ज्ञात करना है, अनेक स्वतंत्र कारणों द्वारा प्रभावित होती है। जो कि उन श्रेणियों में परिवर्तन उत्पन्न करते है।

दोनों श्रेणियों के पद मूल्यों को प्रभावित करने वाली शक्तियां एक दूसरे के कारण तथा परिणाम के रूप में सम्बंधित हैं।

(3) दोनों श्रेणियों के मध्य रेखीय सह–सम्बन्ध होता है।

(अर्थ पर 1 अंक एवं मान्याएं पर 3 अंक कुल 4 अंक)

उत्तर 17.

माह	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
आय	139	145	151	159	162	165	168	170	171	172	174	175

अधिकतम आय (L) = 175 रूपये, न्यूनतम आय (S) = 139 रूपये

विस्तार R = L − S **1 अंक**

= 175 − 139

= 36 रुपये **1 अंक**

विस्तार गुणांक = $\frac{L - S}{L + S}$ **1 अंक**

= $\frac{175 - 139}{175 + 139}$

= $\frac{36}{314}$

विस्तार गुणांक = 0.115 **1 अंक**

कुल 4 अंक

अथवा

निर्देशांक की रचना करते समय निम्न बातों का ध्यान रखना आवश्यक है।

(1) निर्देशांक का उद्देश्य – निर्देशांक को रचना करने से पूर्व इस बात की जानकारी प्राप्त कर लेना आवश्यक होता है कि उनका उद्देश्य क्या है। उद्देश्य का सही रूप से निर्धारण किये बगैर यह जानना असंभव होता है कि निर्देशांक की रचना में निहित पदक्षेपों को किस प्रकार उचित ढंग से सम्पन्न किया जाये।

(2) आधार वर्ष का चुनाव – निर्देशांक प्रायः वार्षिक आधार पर बनाये जाते है। इसलिए निर्देशांक बनाते समय सबसे पहला कार्य आधार वर्ष को निश्चित करना होता है।

(3) वस्तुओं का चुनाव– निर्देशांक बनाने के लिए वस्तुओं का चुनाव करना भी महत्वपूर्ण है। निर्देशांक को महत्वूपर्ण बनाने की दृष्टि से इसमें अधिक से अधिक वस्तुओं का चुनाव किया जाना चाहिए।

(4) वस्तुओं की कीमतों का चुनाव – वस्तुओं का चुनाव करने के बाद इन वस्तुओं की कीमतें ज्ञात की जाती है। ये कीमतें आधार वर्ष या चालू वर्ष दोनों के लिए मालूम की जाती हैं। यह भी ध्यान रखना होगा कि ये कीमतें प्रतिनिधि बाजारों की हों।

(प्रत्येक सही बिन्दु पर 1 अंक कुल 4 अंक)

उत्तर 18. वस्तु की पूर्ति को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक निम्नांकित है :–

1) वस्तु की कीमत :– पूर्ति पर वस्तु की कीमत का प्रभाव पड़ता है। जब किसी वस्तु की कीमत में कमी होती है तो उस वस्तु की पूर्ति घट जाती है। इसके विपरीत, जब किसी वस्तु की कीमत में वृद्धि होती है तो उस वस्तु की पूर्ति बढ़ जाती है।

2) उत्पादन के साधनों की कीमतें :– पूर्ति पर उत्पत्ति के साधनों की कीमतों का भी प्रभाव पड़ता है, यदि उत्पादन के साधनों की कीमतें बढ़ जाती है, तो पूर्ति में कमी आ जाती है। इसके विपरीत उत्पादन के साधनों की कीमतें कम हो जाती है, तो पूर्ति मे में वृद्धि हो जाती हैं।

3) स्थानापन्न वस्तुओं को मूल्य :– पूर्ति पर स्थानापन्न वस्तुओं के मूल्यों का भी प्रभाव पड़ता है। स्थानापन्न वस्तुओं के मूल्य बढ़ जाने पर वस्तु की पूर्ति घट जाती हैं तथा स्थानापन्न वस्तुओं के मूल्य घटने पर वस्तु की पूर्ति बढ़ जाती है।

4) प्राकृतिक तत्व :– पूर्ति पर प्राकृतिक तत्वों का भी प्रभाव पड़ता है। यदि प्राकृतिक तत्व उत्पादन की दृष्टि से अनुकूल है तो पूर्ति बढ़ जाती है। इसके विपरीत, यदि प्राकृतिक तत्व उत्पादन की दृष्टि से प्रतिकूल है तो पूर्ति घट जाती हैं।

5) तकनीकी ज्ञान :– पूर्ति पर तकनीकी ज्ञान का भी प्रभाव पड़ता है। तकनीकी ज्ञान में वृद्धि होने से वस्तु की पूर्ति बढ़ जाती है। इसके विपरीत तकनीकी ज्ञान में कमी होने से वस्तु की पूर्ति घट जाती है।

(प्रत्येक सही बिन्दु पर 1 अंक कुल 5 अंक)

अथवा

अर्थ – एक फर्म द्वारा उत्पादन के सभी साधनों को उनकी सेवाओं के लिए चुकाये गये लगान, ब्याज, मजदूरी, वेतन और सामान्य लाभ के योग को लगान कहते है। लागत वक्रो की आकृति U आकर के होने का सर्वाधिक महत्वपूर्ण कारण फर्म को प्राप्त होने वाली आंतरिक बचते हैं, जो निम्नलिखित है :–

1. तकनीकी बचते :– उत्पादन की तकनीक में सुधार करने पर बचते प्राप्त होती हैं उन्हें तकनीकी बचते कहते हैं। आधुनिक मशीनें, बड़े आकार की मशीनें इत्यादि तकनीकी बचते हैं। ऐसी दशा में, जब उत्पादन अधिक मात्रा में होता है, तब प्रति इकाई लागत कम आती है।

2. श्रम संबंधी बचते :– श्रम संबंधी बचतें श्रम विभाजन और विशिष्टीकरण का परिणाम होती हैं, जब उत्पादन बड़े पैमाने पर किया जाता है, तो श्रम विभाजन एवं विशिष्टीकरण भी उतना ही अधिक संभव होता है। परिणामस्वरूप श्रमिकों की कार्यकुशलता में वृद्धि हो जाती है, जिससे प्रति इकाई उत्पादन लागत कम हो जाती है।

3. विपणन की बचते :– कोई भी फर्म जब अपने उत्पादन की मात्रा को बढ़ाती है, तो विक्रय लागते उस अनुपात में नहीं बढ़ती है, जिससे प्रति इकाई लागत में कमी आ जाती है। यदि फर्म अपनी वस्तु का उत्पादन दो गुना कर देती है,

तो उसकी विक्रय लागतों, जैसे–विज्ञापन एवं प्रचार में व्यय दो गुना नहीं करना पड़ेगा, परिणामस्वरूप उसकी प्रति इकाई लागत में कमी आयेगी।

4. प्रबन्धकीय बचते :– उत्पादन की मात्रा को बढ़ाने पर प्रबंध पर होने वाले व्ययों में कमी आती हैं जिसे प्रबन्धकीय बचते कहते हैं। एक कुशल प्रबन्धक अधिक मात्रा में उत्पादन का प्रबंध उसी कुशलता के साथ कर सकता हैं, जितना की थोड़े उत्पादन का अर्थात प्रबन्ध के व्ययों को स्थिर रखकर यदि अधिक मात्रा में उत्पादन होता हैं तो निश्चित रूप से फर्म की प्रति इकाई उत्पादन लागत घटेगी।

(सही अर्थ लिखने पर 1 अंक सही बिन्दु पर 4 अंक कुल 5 अंक)

उत्तर 19. राष्ट्रीय आय लेखांकन के महत्व निम्न प्रकार से है :–

(1) आर्थिक प्रगति की जानकारी – अर्थव्यवस्था में किन क्षेत्रों का विकास हुआ है किनका नहीं, देश के लिए कैसी योजनाएं बनाना है यह जानकारी राष्ट्रीय आय लेखे से मिलती है।

(2) राष्ट्रीय आय के वितरण का ज्ञान – विभिन्न वर्गों के बीच राष्ट्रीय आय का वितरण किस प्रकार हो रहा है रहन सहन का स्तर क्या है, उपभोग का स्वरूप क्या है यह जानकारी मिलती है।

(3) नीति निर्धारण में महत्व – कोई फर्म नीतियां बनाते समय यह देखती है कि किन वस्तुओं की मांग बढ़ रही है एवं किन वस्तुओं की मांग घट रही है तभी नीतियां बनाती है।

(4) श्रम संघों के लिए महत्व – श्रम संघों को यह पता चलता है कि राष्ट्रीय आय में उनका कितना योगदान है और उन्हें प्रतिफल के रूप में कितना अंश मिल रहा है।

(5) अन्य अर्थ व्यवस्था से तुलना – विभिन्न देशों की आर्थिक उन्नति की तुलना करने में सहायता मिलती है। जिससे विकास कार्यक्रम बनाए जाते हैं

(प्रत्येक सही बिन्दु पर 1 अंक कुल 5 अंक)

अथवा

राष्ट्रीय पूंजी के घटक निम्नलिखित है :–

(1) भवन तथा इमारते – इसमें निजी आवास, सरकारी इमारतें व व्यावसायिक भवन शामिल किए जाते है। सेवाऐं देने के कारण किराया राष्ट्रीय पूंजी में शामिल किया जाता है।

(2) सोने चांदी के भंडार – वे भंडार जिसका प्रयोग विदेशी सौदे को निपटाने में किया जाता है।

(3) उपकरण – इसमें टिकाऊ वस्तुऐं–मशीन, औजार फैक्टरी आदि टिकाऊ उपभोक्ता वस्तुएं स्कटूर, फर्नीचर, रेडियो, टी.वी., सार्वजनिक सम्पत्ति जैसे रेल सड़क, पुल बांध आदि को शामिल किया जाता है।

(4) सभी प्रकार की वस्तुऐं :– विभिन्न उत्पादकों, विक्रय हेतु जो माल स्टॉक में होता है वह सभी राष्ट्रीय पूंजी का भाग है।

(5) शुद्ध विदेशी संपत्ति – हमारे देशवासियों की विनियोग राशि में से विदेशियों की राशि घटाने के बाद जो शेष बचता है उसे शुद्ध विदेशी संपत्ति कहते है।

(प्रत्येक सही बिन्दु पर 1 अंक कुल 5 अंक)

उत्तर 20 उपभोग फलन को प्रभावित करने वाले तत्व निम्न हैं –

(1) द्राव्यिक आय – समाज में आय में वृद्धि होने पर उपभोग प्रवृत्ति बढ़ जायेगी तथा आय में कमी होने पर उपभोग प्रवृत्ति घट जायेगी।

(2) ब्याज की दर – ब्याज की दर बढ़ने पर लोग कम उपभोग करके अधिक बचत करते हैं अर्थात् उपभोग प्रवृत्ति में कमी आयेगी।

(3) आशाओं में परिवर्तन – भविष्य में कीमतों में वृद्धि की आशा होने पर लोग वस्तुओं की अधिक मांग करते हैं तथा उपभोग प्रवृत्ति बढ़ जाती हैं। इसके विपरीत दशा में उनकी उपभोग प्रवृत्ति घट जाती है।

(4) आय का वितरण – आय का वितरण असमान होने पर उपभोग प्रवृत्ति कम होती है, जबकि आय का न्यायपूर्ण वितरण होने पर उपभोग प्रवृत्ति अधिक होती है।

(5) प्रदर्शन प्रभाव– जिन देशों या समाज में प्रदर्शन प्रभाव अधिक होता है, वहां उपभोग प्रवृत्ति ऊंची होती है।

(प्रत्येक सही बिन्दु पर 1 अंक कुल 5 अंक)

अथवा

जब अर्थव्यवस्था में अभावी मांग की स्थिति उत्पन्न हो जाए, तो इसे ठीक करने के लिए निम्न उपाय किए जा सकते हैं –

(I) मौद्रिक उपाय –

(1) अधिक मुद्रा निर्गमन – केन्द्रीय बैंक को अधिकाधिक मात्रा में मुद्रा का निर्गमन करना चाहिए, ताकि सामान्य कीमत स्तर में वृद्धि हो।

(2) साख निर्माण में वृद्धि – इस दृष्टि से केन्द्रीय बैंक दो उपाय कर सकता है:–

(A) परिणात्मक उपाय –

(3) बैंक दर में कमी – बैंक दर में कमी करने पर ब्याज दर में भी कमी आएगी, लोगों को सस्ते ऋण प्राप्त होंगे, जिससे बैंकों का साख–निर्माण अधिक होने लगेगा और देश में कुल मुद्रा पूर्ति की मात्रा बढ़ेगी।

(4) खुले बाजार में प्रतिभूतियों को खरीदना – इससे व्यापारिक बैंकों के नकद–कोषों में वृद्धि होगी और उनकी साख निर्माण क्षमता बढ़ जाएगी।

(5) रिजर्व अनुपात में कमी – रिजर्व अनुपात में कमी कर देने से साख गुणक बढ़ जावेगा और बैंक पहले की तुलना में अधिक साख निर्माण कर सकेंगे।

(B) गुणात्मक उपाय –

(6) उपभोक्ता साख को प्रोत्साहन – इसके लिए केन्द्रीय बैंक उपभोक्ता ऋणों के भुगतान की किस्तों की राशि को घटाकर, भुगतान की अवधि बढ़ा सकती है।

(7) सीमांत कटौती दर में कमी – इससे व्यापारिक बैक, व्यापारियों को उनके स्टॉक के बदले अधिक ऋण दे सकेंगे और अधिक साख का निर्माण हो सकेगा।

(प्रत्येक सही बिन्दु पर 1 अंक कुल 5 अंक)

उत्तर 21. सरकारी बजट की पांच विशेषताएं निम्नलिखित हैं –

(1) बजट का आधार रोकड़ राशि – बजट में समस्त आय–व्यय रोकड़ राशि में होते है उससे सरकार की वास्तविक स्थिति का पता चलता है।

(2) सकल राशि – बजट में कुल आय एक और तथा कुल व्यय को दूसरी ओर दिखाया जाता है। इससे बजट बनाने तथा उसे क्रियान्वित करने में समन्वय बना रहता है।

(3) बजट अवधि – बजट एक निश्चित अवधि सामान्यतः एक वर्ष की अवधि के लिए ही बनाया जाता है। जिससे जनप्रतिनिधि सरकार के कार्यों का प्रतिवर्ष अवलोकन कर सकते हैं।

(4) व्यय समाप्ति नियम – बजट में जो राशि जिस कार्य के लिए आवंटित की जाती है। वह उसी वित्तीय वर्ष में उस कार्य में व्यय हो जानी चाहिए यदि कुछ राशि बच जाती है तो उसे अगले वर्ष समायोजित न कर समाप्त कर दिया जाता है।

(5) मदों के प्रकार – बजट की आय व्यय की मदों को आगम व पूंजीगत मदों में विभाजित करके दर्शाया जाता है।

(प्रत्येक सही बिन्दु पर 1 अंक कुल 5 अंक)

अथवा

बजट बनाने के प्रमुख उद्‌देश्य निम्नलिखित हैं –

(1) हिसाब देयता – जनता के प्रतिनिधियों को यह जानने का अधिकार होता है कि सार्वजनिक धन का उपयोग किस प्रकार किया जा रहा है।

(2) आर्थिक नियंत्रण – बजट के माध्यम से संसद सार्वजनिक कोषों की प्राप्ति और प्रयोग के संबंध में नियंत्रण रखती है तथा इसके लिए उचित नीति का निर्माण करती है।

(3) राजकोषीय उपकरण – बजट केवल आय–व्यय का विवरण मात्र न होकर सरकार के हाथ में एक ऐसा शक्तिशाली उपकरण होता है जिससे देश की आर्थिक व सामाजिक उन्नति संभव होती है।

(4) आर्थिक स्थिरता – बजट का एक उद्‌देश्य आर्थिक स्थिरता बनाए रखना है। आर्थिक उच्चावचनों को आधिक्य या घाटे का बजट बनाकर स्थिरता लाई जा सकती है।

(5) प्रशासकीय कुशलता – बजट में प्रत्येक क्षेत्र एवं विभाग की आवश्यकताओं का अनुमान लगाकर उसके अनुसार व्यय करने की स्वीकृति प्रदान की जाती है। बजट का उद्‌देश्य विभिन्न अधिकारियों के क्षेत्र एवं उत्तरदायित्व को स्पष्ट करना है।

(प्रत्येक सही बिन्दु पर 1 अंक कुल 5 अंक)

उत्तर 22. निर्देशांक ऐसे सापेक्षिक गणितीय अंक है। जो किसी अर्थव्यवस्था के किन्ही चरों में किसी समय विशेष में हुए परिवर्तनों को किसी अन्य पिछले समय की तुलना में प्रकट करते हैं। निर्देशांकों के प्रकार निम्न हैं।

(1) मजदूरों के जीवन निर्वाह सम्बंधी निर्देशांक – ये निर्देशांक मजदूरों की रोजमर्रा की उपयोग सम्बन्धी वस्तुओं के फुटकर मूल्यों के आधार पर बनाये जाते है। जिससे मजदूरों की आर्थिक स्थिति में पैदा होने वाले परिवर्तनों का अध्ययन किया जा सके।

(2) आय निर्देशांक – दो देशों की आर्थिक स्थिति की तुलना करने के लिए इन निर्देशांक का प्रयोग किया जाता है। एक देश दूसरे देश से कितना अधिक विकसित है, यह उन दोनों देशों के राष्ट्रीय आय के निर्देशांक की तुलना करके ज्ञात किया जा सकता है।

(4) थोक मूल्य निर्देशांक – इन निर्देशांकों का उद्देश्य वस्तुओं एवं सेवाओं के थोक मूल्य में होने वाले परिवर्तनों की माप करना होता है।

निर्देश – अर्थ लिखने पर 1 अंक 4 बिन्दु पर 4 अक कुल 5 अंक

अथवा

डॉ. बाउले के अनुसार – अपकिरण पदों के विचलन या अन्तर का माप है। समंक श्रेणी के विभिन्न मूल्यों का अन्तर अपकिरण है। अपकिरण से श्रेणी की रचना का आभास होता है। अपकिरण को द्वितीय श्रेणी का माध्य भी कहते है।

(1) विस्तर – किसी समंक श्रेणी में सबसे बड़े पद मूल्य के अंतर को विस्तार कहते हैं। सतत् श्रेणी में न्यूनतम वर्ग की निचली सीमा को सबसे छोटा मूल्य तथा अधिकतम वर्ग की ऊपरी सीमा को सबसे बड़ा मूल्य माना जाता है

सूत्र – R = L - S

(2) चतुर्थक विचलन – चतुर्थक विचलन श्रेणी के चतुर्थक मूल्यों पर आधारित अपकिरण की एक माप है। तृतीय चतुर्थक तथा प्रथम चतुर्थक के अंतर के आधे को चर्तुथक विचलन तथा अर्द्ध–अंतर चतुर्थक विस्तार कहते हैं।

सूत्र – $Q.D. = \frac{Q3 - Q1}{2}$

(3) माध्य विचलन – समंक श्रेणी के किसी सांख्यिकीय माध्य से समंक श्रेणी के विभिन्न मूल्यों के विचलनों का अंक गणितीय माध्य उसका माध्य विचलन कहलाता है। निम्न तीन में से एक सूत्र का उपयोग किया जाता है।

सूत्र – $\delta a = \frac{\Sigma |da|}{N}$, $\delta M = \frac{\Sigma |dM|}{N}$, $\delta Z = \frac{\Sigma |dz|}{N}$

(4) प्रमाण विचलन – अंकगणितीय माध्य से समंक श्रेणी के विभिन्न पद मूल्यों के विचलनों के वर्गों के अंक गणितीय माध्य का वर्ग मूल्य होता है। दो प्रकार से गणना की जाती है। व्यक्तिगत श्रेणी में खण्डित तथा सतत् श्रेणी में –

व्यक्तिगत श्रेणी में $\delta = \sqrt{\frac{\Sigma d^2}{N}}$

सतत् श्रेणी में $\delta = \sqrt{\frac{\sum f d_i}{N}}$

(सही अर्थ लिखने पर 1 अंक रीतियों पर 2 अंक सूत्रों पर 2 अंक कुल 5 अंक)

उत्तर 23. **मांग का अर्थ –** मांग से अभिप्राय, वस्तु की उन मात्राओं से है जो एक निश्चित समय में, निश्चित मूल्य में, किसी बाजार में उपभोक्ताओं द्वारा खरीदी जाती हैं।

परिभाषा – प्रो. बेनहम के अनुसार – किसी दी हुई कीमत पर किसी वस्तु की मांग उस वस्तु की वह मात्रा है जो उस कीमत पर एक निश्चित समय में खरीदी जायेगी।

मांग का नियम – मांग का नियम वस्तु के मूल्य तथा उसकी मांगी जाने वाली मात्राओं के बीच सम्बधं को बताता है। मांग का नियम यह बताता है कि मूल्य और वस्तु की मांगी गयी मात्रा में विपरीत संबंध होता है। अर्थात् मूल्य बढ़ने पर मांग कम होती है तथा मूल्य कम होने पर मांग बढ़ती है, यदि अन्य बातें स्थिर रहती है। लेकिन मांग का नियम एक गुणात्मक कथन है न कि परिमाणात्मक कथन। अर्थात मांग का नियम मांग में होने वाले परिवर्तन की दिशा को बताता हैं न की मात्रा को मांग के नियम की व्याख्या :–

संतरे का मूल्य	**मांग**
1	30
2	20

3	15
4	12
5	10

उपरोक्त तालिका में जैसे–जैसे संतरे का मूल्य बढ़ता जा रहा है ं उसकी मांग घटती जा रही है।

ग्राफ

प्रस्तुत रेखा चित्र में ox पर संतरे की मांगी गई मात्रा तथा 04 पर संतरे की कीमत दर्शायी गई हैं DD मांग वक्र है संतरे की कीमत जैसे–जैसे बढ़ती जा रही हैं उसकी मांग घटती जा रही हैं जब संतरे का मूल्य 1 रू. है तो मांग 30 इकाई है जब मूल्य बढ़कर क्रमशः 2, 3, 4, 5 हो जाता है ते मांग घटकर 20, 15, 12 ,10 हो जाती है, अर्थात् यह मूल्य तथा मांग के बीच विपरीत संबंध को बताता है।

(सही परिभाषा पर 1 अंक, नियम एवं तालिका पर 2 अंक, रेखा चित्र व्याख्या सहित 3 अंक कुल 6 अंक)

अथवा

अल्पकाल वह समयावधि होती हैं जिसमें उत्पादन के कुछ साधन स्थिर तथा कुछ साधन परिवर्तनशील होते हैं। अल्पकाल में कुल लागत का अध्ययन स्थिर एवं परिवर्तनशील लागत के रूप में करते हैं।

स्थित लागत – स्थिर लागते वे होती है जो कि एक फर्म को स्थिर साधनों को प्रयोग में लाने के लिए करनी पड़ती हैं। स्थिर साधनों से आशय उन साधनों से है जिनको अल्पकाल में उत्पादन की मात्रा के साथ परिवर्तन करना संभव नहीं हैं जैसे फर्म की स्थिर पूंजी या मशीन, भूमि, भवन इत्यादि। अल्पकाल में

उत्पादन पूरी तरह बंद भी कर दिया जाय तो इन लागतों को कम नहीं किया जा सकता हैं। स्थिर लागत को पूरक या अप्रत्यक्ष लागत भी कहते हैं।

परिवर्तनशील लागत :– परिवर्तनशील लागते वे होती हैं जो कि एक फर्म को परिवर्तनशील साधनों को प्रयोग में लाने के लिये करनी पड़ती है। परिवर्तनशील साधन वे होते हैं जिनकों अल्पकाल में भी उत्पादन की मात्रा के साथ परिवर्तित किया जा सकता है। अर्थात् परिवर्तनशील लागतें वे हैं जो उत्पादन में परिवर्तन होने पर परिवर्तित होती हैं जैसे कच्चे माल की लागत, सामान्य श्रमिकों की मजदूरी इत्यादि परिवर्तनशील लागतों में शामिल होती हैं परिवर्तनशील लागत को प्रमुख लागत या प्रत्यक्ष लागत भी कहते हैं।

उत्पादित ईकाईयों की संख्या	**स्थिर लागत FC**	**परिवर्तनशील लागत VC**	**कुल लागत TC**
0	1000	0	1000
10	1000	500	1,500
20	1000	600	1,600
30	1000	1,200	2,200
40	1000	2,000	3000

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है उत्पादन की मात्रा में परिवर्तन होने पर स्थिर लागत 1000 ही हैं जबकि परिवर्तनशील लागत उत्पादन में वृद्धि के साथ बढ़ती जा रही हैं, इसे निम्न रेखा चित्र में दर्शाया गया है।

रेखाचित्र

स्थिर लागत को FC रेखा द्वारा दर्शाया गया हैं TC कुल लागत तथा VC परिवर्तनशील लागत को दर्शाती है। परिर्वनशील लागत 0 से शुरू होती है जो कि दर्शाती है कि उत्पादन बंद होने पर परिवर्तनशील लागत 0 हो जाती है

जबकि स्थिर लागत (FC) उत्पादन शून्य होने पर भी शून्य नहीं होती। परिवर्तनशील लागत में होने वाले परिवर्तन के साथ ही साथ TC (कुल लागत) में भी परिवर्तन होता है।

(स्थिर लागत लिखने पर 1 अंक परिवर्तनशील लागत पर 2 अंक रेखाचित्र बनाने पर व व्याख्या करने पर 4 अंक कुल 6 अंक)

उत्तर 24.

वस्तु	1990		2000		p0q0	p1q0	p0q1	p1q1
	P0	q0	p1	q1				
चावल	2	20	5	15	40	100	30	75
गेहूं	4	4	8	5	16	32	20	40
चना	1	10	2	12	10	20	12	24
ज्वार	5	5	10	6	25	50	30	60
योग					= 91	= 202	= 92	= 199

2 अंक

फिशर का आर्दश निर्देशांक –

$$P01 = \sqrt{\frac{\Sigma p1q0}{\Sigma p0q0} \times \frac{\Sigma p1q1}{\Sigma p0q1}} \times 100$$ **1 अंक**

$$= \sqrt{\frac{202}{91} \times \frac{199}{92}} \times 100$$ **1 अंक**

$$= \sqrt{\frac{40198}{8372}} \times 100$$

$$= \sqrt{4.8015} \times 100$$ **1 अंक**

= 2.1912 x 100

= 219.12 **1 अंक**

कुल 6 अंक

अथवा

अंक	मध्य मूल्य m.v.	आवृत्ति	कल्पित माध्य (25) से विचलन dx	fdx	fdx2
0—1 10—20 20—30 30—40 40—50	5 15 25 35 45	12 21 23 34 10	—20 —10 0 + 10 + 20	— 240 —210 0 + 340 +200	4800 2100 0 3400 4000
		∑f 100		fdx = 90	$\sum fdx^2$ = 14300

2 अंक

प्रमाप विचलन —

f = $\sqrt{\frac{\int dx2}{N} - (\frac{\sum \int dx}{N})2}$ **1 अंक**

f = $\sqrt{\frac{14300}{100} - (\frac{90}{100})2}$ **1 अंक**

f = $\sqrt{143 - 0.81}$

f = $\sqrt{142.19}$ **1 अंक**

f = 11.9 **1 अंक**

कुल 6 अंक

– – – – –